गद्य–खंड के अंतर्गत प्रमुख लेखकों का साहित्यिक परिचय

(1) डॉ0 वासुदेवशरण अग्रवाल

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म-** 7 अगस्त, 1904 ई०।
- **जन्म-स्थान-** मेरठ (उ०प्र०)।
- **उपाधि** - पीएच० डी०, डी० लिट्।
- **भाषा-शैली-** विषयानुकूल, प्रौढ़ और परिमार्जित खड़ी बोली एवं शैली विचारात्मक, गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक।
- **रचनाएँ-** पृथिवीपुत्र, भारत की एकता, कल्पवृक्ष, माताभूमि, वाग्धारा।
- **मृत्यु-** 27 जुलाई 1967 ई०।
- **प्रसिद्धि-** निबन्धकार, टीकाकार और साहित्यिक ग्रंथों के कुशल संपादक के रूप में ख्याति ।

जीवन-परिचयः-

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई० में मेरठ जनपद के खेड़ा ग्राम में हुआ था। इनके माता-पिता लखनऊ में रहते थे; अतः इनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। लखनऊ विश्वविद्यालय ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध-प्रबन्ध पर इनको पी०एचडी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी०लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पालि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्त्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे। 27 जुलाई, सन् 1967 ई० में इनका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचयः-

डॉ० अग्रवाल लखनऊ और मथुरा के पुरातत्व संग्रहालयों में निरीक्षक केंद्रीय पुरातत्व विभाग के संचालक और राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली के अध्यक्ष रहे। कुछ काल तक वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इंडोलॉजी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। डॉ० अग्रवाल ने मुख्य रूप से पुरातत्व को ही अपना विषय बनाया उन्होंने प्रागैतिहासिक वैदिक तथा पौराणिक साहित्य के मर्म का उद्घाटन किया और अपनी रचनाओं में संस्कृति व प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रामाणिक रूप प्रस्तुत किया। वे अनुसंधाता, निबंधकार, संपादक के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे।

रचनाएँः-

निबंध संग्रह- पृथिवीपुत्र, कला और संस्कृति, कल्पवृक्ष, भारत की मौलिक एकता, माताभूमि, वाग्धारा आदि।

शोधग्रंथ- पाणिनिकालीन भारत।

सम्पादन- जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या, बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन। इसके अतिरिक्त इन्होंने पालि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का भी सम्पादन किया।

भाषा-शैली- अग्रवाल की भाषा शुद्ध, परिष्कृत, व्यावहारिक, सुबोध और स्पष्ट खड़ीबोली है। गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं उद्धरण शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से किया है।

(2) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म-** सन् 1907 ई०।
- **जन्म-स्थान-** दुबे का छपरा (बलिया)।
- **पिता-** अनमोल द्विवेदी।
- **माता-** ज्योतिषमती।
- **बचपन का नाम-** वैद्यनाथ द्विवेदी।
- **सम्मान-** पद्मभूषण और मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित।
- **रचनाएँ-** अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा।
- **प्रसिद्धि-** निबंधकार, इतिहास लेखक, अन्वेषक, आलोचक, संपादक तथा उपन्यासकार के रूप में ख्याति।
- **मृत्यु-** 18 मई, सन् 1979 ई०।

साहित्यिक-परिचयः-

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन 1907 ई० में बलिया जिले के 'दुबे का छपरा' नामक गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम अनमोल द्विवेदी था। इनकी प्रतिभा का विशेष विकास विश्वविख्यात संस्था शांतिनिकेतन में हुआ। वहां यह 11 वर्ष तक हिंदी भवन के निदेशक के रूप में कार्य करते रहे। सन् 1949 ई० में लखनऊ विश्वविद्यालय ने इन्हें 'डी० लिट०' की उपाधि से तथा सन् 1957 ई० में भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' की उपाधि से विभूषित किया।

इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया तथा उत्तर प्रदेश सरकार की 'हिंदी ग्रंथ अकादमी' के अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् यह हिंदी 'साहित्य सम्मेलन प्रयाग' के सभापति रहे।

हजारी प्रसाद द्विवेदी हिंदी साहित्य के प्रख्यात निबंधकार, इतिहास लेखक, अन्वेषक, आलोचक, संपादक तथा उपन्यासकार के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक भी थे। उन्होंने विश्व भारती और अभिनव भारती ग्रंथमाला का संपादन किया। उन्होंने विलुप्तप्राय जैन साहित्य को प्रकाश में लाकर अपनी गहन शोध दृष्टि का परिचय दिया। दिवेदी जी की साहित्यिक सेवा को डी० लिट०, पद्मभूषण और मंगला प्रसाद पारितोषिक से सम्मानित किया गया है।

www.gyansindhuclasses.in

रचनाएँः- द्विवेदी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1. **निबंध संग्रह**- अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, आलोक पर्व, कल्पलता।
2. **आलोचना साहित्य-** सूरदास, कालिदास की लालित्य योजना, कबीर, साहित्य सहचर, साहित्य का मर्म।
3. **इतिहास**- हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य।
4. **उपन्यास**- बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा और अनामदास का पोथा।
5. **संपादन**- नाथ सिद्धों की बानियाँ, संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, संदेश रासक।

www.gyansindhuclasses.in

(3) प्रोफेसर जी० सुंदर रेड्डी

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- सन् 1919 ई०।
- **जन्म-स्थान**- आंध्र प्रदेश।
- **कार्य-** आंध्र वि०वि० में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे।
- **प्रारम्भिक शिक्षा**- संस्कृत एवं तेलुगु से।
- **लेखन विधा**- हिन्दी और तेलुगु भाषा साहित्य।
- **शैली-** विवेचनात्मक, गवेषणात्मक, आलोचनात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ-** साहित्य और समाज, मेरे विचार, दक्षिण की भाषाएँ और उनका साहित्य आदि।
- **मृत्यु**- सन् 2005 ई०।

जीवन परिचयः-

प्रो० जी० सुंदर रेड्डी जी का जन्म 1919 ई० में आंध्र प्रदेश के बेल्लूर जनपद के बत्तुलिपल्लि नामक ग्राम में हुआ था। प्रो० जी० सुंदर रेड्डी आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत एवं तेलुगु भाषा में हुई। रेड्डी जी आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष भी रहे। इन के निर्देशन में हिंदी और तेलुगु :एक तुलनात्मक अध्ययन ग्रंथ पर शोध कार्य भी हुआ। इनका निधन सन् 2005 ई० में हो गया।

www.gyansindhuclasses.in

साहित्यिक परिचयः-

अहिन्दी प्रदेश के निवासी होते हुए भी प्रो० जी० सुंदर रेड्डी ने हिन्दी भाषा पर अच्छा अधिकार प्राप्त किया है। राष्ट्रवादी हिन्दी प्रचारक, प्रख्यात साहित्यकार एवं तुलनात्मक साहित्य के मूर्धन्य समीक्षक, श्रेष्ठ विचारक, समालोचक एवं निबन्धकार प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी जी ने दक्षिण भारतीयों के लिए हिन्दी और उत्तर भारतीयों के लिए दक्षिणी भाषाओं के अध्ययन की प्रेरणा दी है। इन्होंने हिन्दी भाषियों के लिए तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम साहित्य की रचना की है। वे आजीवन भाषायी एकता के लिए प्रयासरत रहे। इनके अनेक निबन्ध हिन्दी, अँग्रेजी एवं तेलुगू पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। हिंदी भाषी न होते हुए भी रेड्डी जी ने हिंदी को अपनी रचनाओं के रूप में जो अमूल्य निधि सौंपी है। इसके लिए हिंदी साहित्य-जगत सदैव ऋणी रहेगा।

कृतियाँः-

प्रो० जी० सुन्दर रेड्डी के प्रकाशित ग्रन्थ निम्नलिखित हैं-

- साहित्य और समाज
- मेरे विचार
- हिन्दी और तेलुगू : एक तुलनात्मक अध्ययन
- दक्षिण की भाषाएं और उनका साहित्य
- वैचारिकी : शोध और बोध
- वेलुगू दारुल (तेलुगू)
- लैंग्वेज प्रॉब्लम इन इण्डिया (सम्पादित अँग्रेजी ग्रन्थ)

(4) ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म-** सन् 1931 ई०।
- **प्रसिद्धि-** मिसाइलमैन एवं जनता के राष्ट्रपति।
- **पिता-** जैनुलाब्दीन।
- **माता-** अशिअम्मा।
- **शिक्षा-** इंजीनियरिंग।
- **लेखन विधा-** काव्य, आत्मकथा, विज्ञान।
- **भाषा-** सरल, प्रवाहमय, बोधगम्य।
- **शैली-** चिन्तनपरक, आत्मकथात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ-** इग्नाटिड माइंड्सः अनलीशिंग द पावर विदिन इण्डिया, माय जर्नी आदि।
- **मृत्यु-** 27 जुलाई, सन् 2015 ई० ।

जीवन परिचय-

भारत रत्न अब्दुल कलाम जी का पूरा नाम- अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। ए०पी०जे० अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को धनुषकोड़ी गाँव, रामेश्वरम, तमिलनाडु में हुआ था। इनके पिता का नाम जैनुलाब्दीन था, जो मछुआरों को किराए पर नाव दिया करते थे।

कलाम जी की आरम्भिक शिक्षा रामेश्वरम में ही पंचायत प्राथमिक विद्यालय हुई, इसके पश्चात् इन्होंने मद्रास इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से अन्तरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक होने के पश्चात् इन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिए भारतीय रक्षा अनुसन्धान एवं विकास संस्थान में प्रवेश किया। वर्ष 1962 में भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान

YouTube Subscribe "Gyansindhu Coaching Classes"

संगठन में आने के पश्चात् इन्होंने कई परियोजनाओं में निदेशक की भूमिका निभाई।

इन्होंने एस० एल० वी० के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसी कारण इन्हें मिसाइल मैन भी कहा गया। इसरो के निदेशक पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात्, ये वर्ष **2002** से **2007** तक भारत के **राष्ट्रपति** पद पर आसीन रहे, जिसके पश्चात् इन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य किया।

अपने अन्तिम क्षणों में भी ये शिलांग में प्रबन्धन संस्थान में पढ़ा रहे थे। वहीं पढ़ाते हुए 27 जुलाई, 2015 में इनका निधन हो गया। इन्हें विभिन्न विश्वविद्यालयों से मानद उपाधियाँ प्राप्त होने के साथ-साथ भारत सरकार द्वारा वर्ष 1981 में **पद्म भूषण**, वर्ष 1990 में **पद्म विभूषण** से तथा वर्ष 1997 में **भारत रत्न** पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहित्यिक सेवाएँ- कलाम जी ने अपनी रचनाओं के द्वारा विद्यार्थियों व युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। इन्होंने अपने विचारों को विभिन्न पुस्तकों में समाहित किया है।

कृतियाँ-

1. **इण्डिया 2020**
2. **ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम**
3. **माई जर्नी**
4. **इग्नाइटेड माइण्डस**
5. **विंग्स ऑफ फायर**
6. **भारत की आवाज**
7. **टर्निंग पॉइण्टेज**
8. **हम होंगे कामयाब इत्यादि**
9. **आरोहणः प्रमुख स्वामी जी के साथ मेरा आध्यात्मिक सफर**

www.gyansindhuclasses.in

काव्य–खंड के अंतर्गत
प्रमुख कवियों का साहित्यिक परिचय

(1) अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- 15 अप्रैल, सन् 1865 ई०।
- **जन्म- स्थान**- निजामाबाद (आजमगढ़) ।
- **पिता**- भोलासिंह उपाध्याय।
- **माता**- रुक्मिणी देवी ।
- **शिक्षा**- स्वाध्याय से विभिन्न भाषाओं का ज्ञान ।
- **भाषा-शैली**- ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली, प्रबन्ध एवं मुक्तक शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ**- प्रिय प्रवास, चोखे चौपदे, चुभते चौपदे, वैदेही-वनवास, पारिजात, रसकलश।
- **मृत्यु**- 6 मार्च, सन् 1947 ई०।

जीवन-परिचयः-

हरिऔध जी का जन्म 15 अप्रैल सन 1865 ई० में निजामाबाद (आजमगढ) में हुआ था। पिता का नाम भोलासिंह उपाध्याय व माता का नाम रुक्मिणी देवी था। स्वाध्याय से इन्होने हिंदी अंग्रेजी फारसी संस्कृत आदि भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर कर लिया। अध्यापक, कानूनगो, अवैतनिक शिक्षक के रूप में काम करते हुए एवं हिन्दी माता की सेवा करते हुए 6 मार्च सन् 1947 ई० को पंचतत्व में लीन हो गए।

साहित्यिक-परिचयः-

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि हरिऔध जी ने गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में हिंदी माता की सेवा की। हरिऔध जी ने सर्वप्रथम खड़ी बोली में काव्यरचना करके यह सिद्ध कर दिया कि खड़ी बोली में भी ब्रजभाषा के समान सरसता और मधुरता आ सकती है।

इनमें एक श्रेष्ठ कवि के समस्त गुण विद्यमान थे। उनका 'प्रियप्रवास' महाकाव्य अपनी काव्यगत विशेषताओं के कारण हिंदी महाकाव्यों में 'माइलस्टोन' माना जाता है। 'निराला' के शब्दों में -"इनकी यह एक सबसे बड़ी विशेषता है कि ये हिंदी के सार्वभौम कवि हैं। खड़ी बोली, उर्दू के मुहावरे, ब्रजभाषा, कठिन सरल सब प्रकार की कविता की रचना कर सकते हैं।"

कृतियाँ-

हरिऔध जी मूलतः कवि ही थे, उनके उल्लेखनीय ग्रंथ निम्नलिखित हैं काव्य ग्रंथ-

1. **प्रियप्रवास**- 'मंगलाप्रसाद पुरस्कार' प्राप्त हरिऔध जी का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण ग्रंथ है। खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है।
2. **अन्य**- कवि सम्राट, वैदेही वनवास, पारिजात, रसकलश, चुभते चौपदे, चौखे चौपदे, ठेठ हिंदी का ठाठ, अधखिला फूल, रुक्मिणी परिणय
3. **हिंदी भाषा और साहित्य का विकास।**
4. **बाल साहित्य**- बाल विभव, बाल विलास, फूल पत्ते, चन्द्र खिलौना, खेल तमाशा, उपदेश कुसुम, बाल गीतावली, चाँद सितारे, पद्य-प्रसून।

(2) मैथिलीशरण गुप्त

www.gyansindhuclasses.in

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- 3 अगस्त, सन् 1886 ई०।
- **जन्म-स्थान**- चिरगाँव (झाँसी)।
- **पिता**- सेठ रामचरण गुप्त।
- **मुख्य रचनाएँ** - भारत-भारती, साकेत, यशोधरा, द्वापर, पंचवटी, जयद्रथ-वध, झंकार, सिद्धराज, कुणाल गीत, अनघ।
- **शिक्षा**- घर पर ही।
- **भाषा-शैली**- खड़ी बोली, सरल, सुसंगठित, प्रसाद तथा ओजगुण से युक्त। उपदेशात्मक, प्रबन्धात्मक, गीति व विवरणात्मक शैली।
- **मृत्यु**- 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई०।

जीवन-परिचयः-

श्री मैथिलीशरण गुप्त का जन्म चिरगाँव (झाँसी) में सन् 1886 ई० में हुआ था। इनके पिता सेठ रामचरण गुप्त को हिन्दी-साहित्य से विशेष प्रेम था। गुप्तजी की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही सम्पन्न हुई। 12 दिसम्बर, सन् 1964 ई० में गुप्तजी का देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचयः-

मैथिलीशरण गुप्त आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के पश्चात् उनकी प्रेरणा से काव्य-रचना करके इन्होंने हिन्दी-काव्य की धारा को समृद्ध किया। इनकी कविता में राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ है। इसी कारण हिन्दी-साहित्य के तत्कालीन विद्वानों ने इन्हें **'राष्ट्रकवि'** की उपाधि से विभूषित किया।

गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाएँ कलकत्ता (कोलकाता) से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका **'वैश्योपकारक'** में प्रकाशित होती थीं। आचार्य द्विवेदी से सम्पर्क होने के पश्चात् मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं

इनकी प्रथम पुस्तक 'रंग में भंग' का प्रकाशन सन् 1909 ई में हुआ; किन्तु इन्हें ख्याति सन् 1912 ई० में प्रकाशित पुस्तक 'भारत-भारती' के पश्चात् ही मिलनी प्रारम्भ हुई। इसी पुस्तक ने इन्हें 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात किया। गुप्तजी प्रमुख रूप से प्रबन्ध-काव्य की रचना में सिद्धहस्त थे। ये द्विवेदी युग के सबसे अधिक लोकप्रिय कवि माने जाते हैं।

कृतियाँः- गुप्तजी की रचनाएँ दो प्रकार की हैं-

मौलिक रचनाएँ-

1. **भारत-भारती**- इसमें देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाओं पर आधारित कविताएँ है। इसी रचना के कारण वे राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हुए।
2. **साकेत**- 'श्रीरामचरितमानस' के पश्चात् हिन्दी में राम-काव्य का दूसरा स्तम्भ 'साकेत' ही है। इसमें 12 सर्ग हैं।
3. **यशोधरा** - इसमें उपेक्षित यशोधरा के चरित्र को काव्य का आधार बनाया गया है।

अनूदित रचनाएँ- प्लासी का युद्ध, मेघनाद-वध, वृत्र-संहार आदि।

गुप्तजी की अन्य प्रमुख पुस्तकें-

जयद्रथ-वध, झंकार, सिद्धराज, कुणाल गीत, अनघ, पंचवटी, द्वापर, नहुष, पृथ्वीपुत्र तथा प्रदक्षिणा आदि हैं।

(3) जयशंकर प्रसाद

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म**- सन् 1889 ई० में।
- **जन्म-स्थान**- उत्तर प्रदेश राज्य के काशी में।
- **पिता का नाम**- श्री देवी प्रसाद
- **शैक्षणिक योग्यता**- अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, हिंदी व संस्कृत का स्वाध्याय
- **लेखन विधा**- काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि।
- **भाषा-शैली**- भाषा शुद्ध, सरस, साहित्यिक एवं संस्कृ तनिष्ठ खड़ीबोली है। वर्णनात्मक, भावात्मक, आलंकारिक, चित्रात्मक शैलीं।
- **मुख्य रचनाएँ**- कामायनी, झरना, लहर, आँसू, महाराणा का महत्त्व, छाया, इन्द्रजाल, आकाशदीप, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी
- **मृत्यु**- 15 नवंबर, 1937 ई० में

जीवन परिचयः-

प्रसाद जी का जन्म काशी के 'सुंघनी साहू' नाम से प्रसिद्ध वैश्य परिवार में 30 जनवरी, 1889 ई० को हुआ था। पिता जी का नाम देवी प्रसाद था। बचपन में ही इनके माता-पिता की मृत्यु हो गयी। परिवार का सारा भार इनके बड़े भाई पर आ गया। सर्वप्रथम इनका नाम 'क्वींस कालेज' में लिखाया गया, किन्तु वहाँ इनका मन नहीं लगा और घर पर ही योग्य शिक्षकों से अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे, कुछ दिन बाद इनके बड़े भाई शम्भूनाथ जी भी चल बसे। अब सारा भार प्रसाद जी के कंधो पर था। इन्होंने तीन शादियां कीं, किन्तु तीनों ही पत्नियों की असमय मृत्यु हो गयी। इसी बीच इनके छोटे भाई की मृत्यु हो गयी। इन सभी असामयिक मौतों से यह अन्दर-ही-अन्दर टूट गये। संघर्ष और चिन्ताओं ने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचायीं। क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण 15 नवम्बर, 1937 ई० को 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचयः-

प्रसाद जी के काव्य में सौन्दर्य एवं प्रेम के साथ मानवतावादी दृष्टिकोण है। प्रसाद जी ने कुल रचनाओं से हिन्दी साहित्य में एक युग प्रसाद युग की सृष्टि की रचना 'चित्राधार' में प्रकृति की रमणीयता एवं सौंदर्य के दर्शन होते हैं। **'प्रेमपथिक'** में मानव सौन्दर्य के प्रति जिज्ञासा का भाव व्यक्त हुआ है। **'आँसू'** एक **विरह काव्य** है तथा **'कामायनी'** में प्रसाद की सिद्धावस्था एवं आध्यात्मिकता का पूर्ण परिपाक हुआ है। अतः प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

कृतियाँः-

प्रसाद जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। महान् कवि, सफल नाटककार, उपन्यासकार, कुशल कहानीकार और श्रेष्ठ निबन्धकार थे।

इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

नाटक- चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, विशाख, राज्यश्री, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ, करुणालय, एक घूँट, सज्जन एवं प्रायश्चित।

कहानी संग्रह- प्रतिध्वनि, छाया, इन्द्रजाल, आकाशदीप, आँधी।

www.gyansindhuclasses.in

YouTube Subscribe "Gyansindhu Coaching Classes"

काव्य- कामायनी (महाकाव्य), झरना, लहर, आँसू, महाराणा का महत्त्व, कानन कुसुम आदि प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ हैं।
उपन्यास- कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)।
निबन्ध संग्रह- 'काव्य कला और अन्य निबन्ध हैं।
भाषा शैली:- प्रसादजी की भाषा शुद्ध, सरस, साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है। इनके काव्य में वर्णनात्मक, भावात्मक, आलंकारिक, चित्रात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

(4) सुमित्रानन्दन पन्त

www.gyansindhuclasses.in

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म-** सन् 1900 ई० ।
- **जन्म-स्थान-** कौसानी (कुमायूँ) ।
- **पूर्व-नाम-** गुसाईं दत्त ।
- **पिता-** गंगादत्त पन्त ।
- **संपादन-** रूपाभ का ।
- **भाषा-शैली-** संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली। छायावादी काव्य-शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ-** वीणा, पल्लव, युगवाणी, लोकायतन, चिदम्बरा, स्वर्ण किरण, उत्तरा, अतिमा।
- **मृत्यु-** सन् 1977 ई०।

जीवन-परिचय:-

प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त जी का जन्म सन 1900 ई० में अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा अल्मोड़ा में ही हुई। बचपन का नाम गुसाईदत्त था। हिन्दी माता की सेवा करते हुए हिन्दी का यह अमर पुत्र सन 1977 ई० में पंचतत्व में लीन हो गया।

साहित्यिक परिचय:-

सुमित्रानन्दन पंत जी की प्रथम कविता गिरजे का घंटा सन् 1916 ई० में प्रकाशित हुई तत्पश्चात् इनकी रचनाएँ **'उच्छवास'** एवं **'ग्रन्थि'** सन् 1920 में प्रकाशित हुई साथ ही सन् 1927 ई० में **'वीणा'** 1928 ई० में **'पल्लव'** नामक कविता संग्रह प्रकाशित हुए। कुछ दिन कालाकांकर में ठहरे। पुनः प्रयाग आकर **'रूपाभ'** नामक पत्रिका का संपादन कार्य संभाला।

अरविन्द घोष जी से मुलाकात के बाद पंत जी **अरविंद दर्शन** की ओर उन्मुख हुए और अपनी रचनाओं में अरविन्द दर्शन को पिरोया। **'कला और बूढ़ा चाँद'** पर **साहित्य अकादमी पुरस्कार, 'लोकायतन'** पर **सोवियत लैंड नेहरू** एवं **'चिदम्बरा'** नामक कृति पर **ज्ञानपीठ पुरस्कार** प्राप्त किया।

रचनाएँ:- प्रमुख कृतियाँ निम्न लिखित हैं-

1. **लोकायतन-** इसमें सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है।
2. **वीणा-** प्रारम्भिक गीत संग्रहित हैं एवं प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य के दृश्य हैं।
3. **पल्लव-** प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य के व्यापक चित्र प्रस्तुत किये गये हैं।
4. **गुंजन-** कवि की गम्भीर एवं प्रौढ़ रचनाएँ।
5. **ग्रन्थि-** इस काव्य-संग्रह का स्वर प्रमुख रूप से मुखर हुआ है। प्रकृति यहाँ भी कवि की सहचरी हैं।

अन्य- स्वर्णधूलि, स्वर्णकिरण, उत्तरा, युगपथ, अतिमा, युगान्त, युगवाणी, ग्राम्या आदि।

'युगान्त', 'युगवाणी' और **'ग्राम्या'** में कवि समाजवादी और भौतिकवादी दर्शन की ओर उन्मुख हुए हैं। इन रचनाओं में कवि ने दीन-हीन और शोषित वर्ग को अपने काव्य का आधार बनाया है।

(5) महादेवी वर्मा

www.gyansindhuclasses.in

संक्षिप्त परिचय

- **जन्म-** सन् 1907 ई०
- **जन्म स्थान-** फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश)
- **पिता का नाम-** श्री गोबिन्दसहाय वर्मा
- **माता का नाम-** श्रीमती हेमरानी
- **उपलब्धियाँ-** महिला विद्यापीठ की प्राचार्या, पद्मभूषण पुरस्कार, सेकसरिया तथा मंगलाप्रसाद पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार तथा भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।
- **कृतियाँ-** नीहार, रश्मि, नीरजा, सान्ध्य-गीत, दीपशिखा।
- **भाषा-**खड़ी बोली व ब्रज भाषा।
- **शैली-** मुक्तक, चित्र, प्रगीत।
- **मृत्यु-** 11 सितम्बर, 1987 ई०।

जीवन परिचय:-

पीड़ा की अमर गायिका, आधुनिक युग की मीरा महादेवी वर्मा जी का जन्म फर्रूखाबाद के एक शिक्षित कायस्थ परिवार में सन् **1907 ई०** में होलिका दहन के दिन हुआ था। इनके पिता **श्री गोविन्दप्रसाद वर्मा**, एक कॉलेज में प्रधानाचार्य थे। इनकी माता **हेमरानी** परम विदुषी धार्मिक महिला थीं। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई।

संस्कृत से एम० ए० उत्तीर्ण करने के बाद ये प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्या हो गयीं। इनका विवाह 9 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। इनके पति **श्री रूपनारायण सिंह** एक डॉक्टर थे, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं रहा था। महादेवी जी ने घर पर ही चित्रकला तथा संगीत की शिक्षा भी प्राप्त की। कुछ समय तक ये 'चाँद' पत्रिका की सम्पादिका भी रहीं। **11 सितम्बर, 1987 ई०** को इस महान् लेखिका का स्वर्गवास हो गया।

साहित्यक परिचय:-

महादेवी वर्मा जी **छायावादी कवियों की वृहत् चतुष्टयी** में आती हैं। इनके काव्य में वेदना की प्रधानता है। काव्य के अतिरिक्त इनकी बहुत-सी श्रेष्ठ गद्य-रचनाएँ भी हैं। इन्होने प्रयाग में **'साहित्यकार संसद'** की स्थापना करके साहित्यकारों का मार्गदर्शन भी किया।

'चाँद' पत्रिका का सम्पादन किया और नारी को अपनी स्वतन्त्रता और अधिकारों के प्रति सजग किया है। कुछ वर्षो तक ये उत्तर प्रदेश विधान-परिषद् की मनोनीत सदस्या भी रहीं। भारत के राष्ट्रपति से इन्होने **'पद्मभूषण'** की उपधि प्राप्त की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से इन्हें **'सेकसरिया पुरस्कार'** तथा **'मंगलाप्रसाद पारितोषिक'** मिला। मई, 1983 ई० में

www.gyansindhuclasses.in

'भारत-भारती' तथा नवम्बर 1983 ई० में यामा पर **'ज्ञानपीठ पुरस्कार'** से इन्हें सम्मानित किया गया।

रचनाएँ:-

- **नीहार, रश्मि, नीरजा, साध्यगीत,**
- **दीपशिखा, यामा, सन्धिनी,**
- **आधुनिक कवि,**
- **सप्तपर्णा**
- **अतीत के चलचित्र**
- **स्मृति की रेखाएँ**
- **श्रृंखला की कड़ियाँ**

आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

www.gyansindhuclasses.in

(6) रामधारी सिंह 'दिनकर'

संक्षिप्त-परिचय

- **जन्म-** 30 सितम्बर, 1908 ई० ।
- **जन्म-स्थान-** सिमरिया (मुँगेर), बिहार ।
- **पिता-** रविसिंह ।
- **भाषा-शैली-** परिष्कृत खड़ीबोली, प्रबन्ध और मुक्तक शैली।
- **प्रमुख रचनाएँ-** उर्वशी, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, रेणुका, परशुराम की प्रतीक्षा, मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, रेती के फूल, उजली आग।
- **मृत्यु-** 24 अप्रैल, 1974 ई०।

साहित्यिक परिचय:-

राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म **सन् 1908 ई०** में **बिहार के मुंगेर जिले के सिमरिया घाट** नामक ग्राम में हुआ था, इनके पिता का नाम रविसिंह एवं माता का नाम श्रीमती मनरूप देवी था। बाल्यावस्था में ही इनकी काव्य प्रतिभा का परिचय हो गया था, इन्होंने मिडिल कक्षा में पढ़ते हुए **'वीरबाला'** नामक काव्य की रचना कर ली थी। मैट्रिक में पढ़ते समय इनका **'प्रणभंग'** नामक काव्य प्रकाशित हो गया था। इन्होंने मोकामा घाट से मैट्रिक तथा पटना विश्वविद्यालय से बी०ए० (ऑनर्स) किया। इसके पश्चात् दिनकर जी मोकामा घाट हाईस्कूल में एक वर्ष तक प्राचार्य रहे। कुछ समय पश्चात् **मुजफ्फरपुर कॉलेज** में **हिन्दी विभागाध्यक्ष** नियुक्त हुए। सन् **1952** में इन्हें **राज्यसभा का सदस्य** मनोनीत किया गया, जहाँ ये सन् 1962 तक रहे। सन् 1963 में भागलपुर विश्वविद्यालय के **कुलपति** नियुक्त किए गए। दिनकर जी ने भारत सरकार की हिन्दी-समिति के सलाहकार और **आकाशवाणी** के **निदेशक** के रूप में भी कार्य किया, इन्हें सन् 1959 में **'पद्मविभूषण'** सम्मान की उपाधि से अलंकृत किया गया। दिनकर जी **'साहित्य अकादमी पुरस्कार'** और **'ज्ञानपीठ पुरस्कार'** से भी सम्मानित किए गए। यह महान् साहित्यकार **सन् 1974** में इस संसार को सूना कर गया।

www.gyansindhuclasses.in

कृतियाँ/रचनाएँ:-

दिनकर जी की प्रसिद्ध कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

1. **निबन्ध संग्रह-** मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, रेती के फूल, उजली आग।
2. **संस्कृति ग्रन्थ-** संस्कृति के चार अध्याय, भारतीय संस्कृति की एकता।
3. **आलोचना ग्रन्थ-** शुद्ध कविता की खोज।
4. **काव्य ग्रन्थ-** रेणुका, हुँकार, सामधेनी, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी, परशुराम की प्रतीक्षा।

भाषा-शैली:-

दिनकर जी की भाषा सुबोध और स्पष्ट तत्सम शब्दों से युक्त है। इन्होंने अपने निबन्धों में विवेचनात्मक, समीक्षात्मक और भावात्मक शैली का प्रयोग किया है।

YouTube Subscribe "Gyansindhu Coaching Classes"